समझ की खिड़की खोलता है साहित्य

अजा शर्मा

स्कूलों में पढ़ना-लिखना सिखाने की जद्दोजहद में पढ़कर समझने, सवाल करने, ख़ुद का नया लिखने और लिखे हुए पर प्रतिक्रिया देने जैसी महत्त्वपूर्ण प्रक्रियाएँ सीमित हो जाती हैं। चिन्तनशील साक्षरता की जो बात आजकल होती है उसके लिए ज़रूरी है कि बतौर पाठक बच्चों को हम एक स्तर आगे लेकर आएँ और लिखे के पार जाना सिखाएँ। चिन्तनशील पाठक बनने और साहित्य का आस्वादन करने के लिए संवाद की यह प्रक्रिया बेहद ज़रूरी है। बच्चों के साथ काम करने के अपने ज़मीनी अनुभवों से समृद्ध अजा का यह आलेख। सं.

पाठक प्रतिक्रिया और साहित्य

इस लेख में अमरीकी शिक्षाविद लूईस रोज़नब्लॉट के पढ़ने से सम्बन्धित शोध और विचारों पर एक अनुभव-आधारित समझ विकसित करने का प्रयास किया गया है। रोज़नब्लॉट की थ्योरी को 'रीडर रिस्पोंस' (पाठक प्रतिक्रिया) थ्योरी कहते हैं जिसमें पढ़ने को किताब और पाठक के बीच एक लेन-देन की तरह देखा गया है। 'पाठक को असक्रिय' और 'पाठ को सर्वोच्च' मानने के नज़रिए से उन्होंने हमारा ध्यान खींचा और अर्थ निर्माण में पाठक की सक्रिय भूमिका को समझने और उभारने पर ज़ोर दिया। इसको हम चार मुख्य बिन्दुओं में समझ सकते हैं :

- पढ़ना एक निर्माणात्मक प्रक्रिया है
- अर्थ, सिर्फ़ लिखे शब्दों में नहीं है
- पाठक सक्रियता से अपने अनुभवों, पूर्व ज्ञान के आधार पर अर्थ निर्माण करते हैं
- जानकारी के लिए पढ़ना बनाम रस के लिए पढ़ना

हमारे शैक्षिक उद्देश्यों के सन्दर्भ में इस थ्योरी को समझने की आवश्यकता

इन सिद्धान्तों पर आगे बढ़ने से पहले, शायद मन में सवाल उठे कि हम रोज़नब्लॉट के सिद्धान्तों की बात क्यों कर रहे हैं? अपने एक लेख में शिक्षाविद शोभा सिन्हा हमारा ध्यान इस बात की ओर खींचते हुए कहती हैं कि जहाँ देश में बड़े सर्वे और हमारी कक्षाओं के हमारे अनुभव, पढ़ने के न्यूनतम कौशलों के विकसित होने पर भी सवाल खड़े कर रहे हों वहाँ लूई रोज़नब्लॉट को समझने की आखिर क्या आवश्यकता है? हमारी चिन्ताएँ तो डिकोडिंग से ही आगे नहीं बढ़ पा रही हैं! पढ़ने पर हमारी समझ भाषा कक्षाओं में क्या हो और क्या नहीं हो, तक ही सीमित है। यहाँ तक कि कई बार हम साहित्य को भी भाषा सीखने के ज़रिए की नज़र से ही देखते हैं। बच्चे के पढ़ पाने के लिए हम तमाम प्रयास करते हैं, कई तरह की योजनाएँ, एनजीओ कार्यक्रम, प्रशिक्षण आदि और सम्बन्धित टीएलएम व टूल भी निर्मित हो गए हैं। पर फिर भी पढ़ने के इस चक्र में हमारा कितना ध्यान पाठक पर है? क्या हम पढ़ने के सफ़र पर निकले बच्चों को सच में पढ़ने से जोड़ पा रहे हैं? पढ़ने से जुड़ना आख़िर

होता क्या है?

एक अच्छा पाठक कौन है? जो फर्राटे से सब-कुछ पढ़ ले या फिर जो पढ़े हुए को समझ पाए या वो जो पढ़े हुए का अर्थ अपने जीवन में भी समझ पाए। अगर आप तीसरे विकल्प से सहमत हैं तो यह मानेंगे कि ऐसा तभी होगा जब पाठक, पढ़ने से सही मायनों में जुड़ पाए। हमारी शिक्षा नीतियाँ कुछ इसी तरह का सपना देखती हैं। हमारे साक्षरता कार्यक्रम बच्चों के लिए सिर्फ़ पढ़ना-लिखना आने से कहीं ज़्यादा चाहते हैं। तो फिर पढ़ने से जुड़े काम भी, जानकारी आधारित पढ़ने और थोड़ा-बहुत सीख जाने से कहीं आगे, पढ़ने के अनुभव और उसके अहसास को सक्रिय करने पर केन्द्रित होने चाहिए। पर क्या यह हर पाठ के साथ सम्भव है? शायद नहीं। यहीं पर, साहित्य हमारे जीवन में और हमारी कक्षाओं में प्रवेश करता है।

बच्चों के लिए साहित्य क्यों?

हमारी व्यवस्था में पाठ्यपुस्तक का स्थान, स्कूली शिक्षा में उसकी भूमिका इतनी प्रबल है कि हमारा सारा ध्यान उसे बनाने, लिखने, वितरण करने और पूरा करने में रहता है। साहित्य के बारे में भी हमारा सोचने का नज़रिया पाठ्यपुस्तक जैसा ही बँध कर रह जाता है। पाठ्यपुस्तक का अपना एक उद्देश्य है और साहित्य के साथ इसे मिलाना ठीक नहीं। साहित्य से बच्चों को बहुत छोटी उम्र से जोड़ना ही असल में इसलिए आवश्यक हो जाता है कि साहित्य सम्भावनाओं से भरा होता है। इसमें कोई तय अर्थ जोड़ने की आवश्यकता नहीं होती, इसमें अपने अनुभवों को समझा जा सकता है और अपने अर्थों को स्वयं गढ़ा जा सकता है। ऐसा कहा गया है कि 'साहित्य एक आइना भी है और खिड़की भी'। साहित्य दुनिया की हमारी समझ को विस्तार देता है और इस दुनिया में हमारे होने को भी। इनके अलावा साहित्य बच्चों को भाषा का वह आनन्द और उसकी अनुभूति भी देता है जो पाठक बनने के उनके सफ़र के लिए एक ज़रूरी पड़ाव है, पढ़ने से हमें जीवन पर्यन्त जोड़ देता है, सिर्फ़ स्कूली शिक्षा के सफ़र तक नहीं।

एक अच्छा साहित्य पढ़ते समय कुछ ऐसे अहसास दिल में छप जाते हैं जैसे किसी पहाड़ी पर एक ख़ूबसूरत सूर्यास्त देखते हुए हों। आपने शायद यह अनुभव किया हो— एक कहानी पढ़ते हुए उस कहानी के किसी पात्र में ख़ुद को पाना, या किसी वाक़ए पर मन का ख़ुश हो जाना, गहरे अहसासों को शब्द मिलना, पढ़े हुए पर किसी से बात करने का मन, कुछ देर उस पर सोचते रहना। हम जब साहित्य पढ़ते हैं तो हम इन सब अहसासों से गुज़रते हैं और कभी इनपर सोचते हैं और बात करते हैं। इनका आपके लिए क्या फ़ायदा है? या इनकी वजह से आपकी ज़िन्दगी में क्या कोई तात्कालिक प्रभाव पड़े? नहीं? तो क्या आप ऐसे अहसास के ज़रियों को ख़त्म कर देंगे? शायद नहीं। ऐसे अहसास हमारी मानवीय ज़रूरत का हिस्सा हैं। हमारा होना, इन अनुभवों में गुँथा-बुना है। और यही अहसास प्राप्त करना भी हमारा पढ़ने का उद्देश्य है। बच्चों के लिए भी पढ़ने के दोनों उद्देश्य सार्थक रूप से अनुभव करना, पढ़ने के सफ़र में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक है।

इसके अलावा साहित्य हमें भाषा की ख़ूबसूरती से भी परिचित कराता है जो जाने-अनजाने में हमारे सोचने-विचारने और कहने में शामिल हो जाता है।

साहित्य और पाठक का जुड़ाव

अमरीकी शिक्षाविद लुई रोज़नब्लॉट का मानना था कि 'पढ़ना, पाठक[1] और पाठ के बीच एक लेन-देन की तरह है। एक कहानी या कविता काग़ज़ पर फैली स्याही से ज़्यादा नहीं हैं, जब तक एक पाठक उन्हें सार्थक चित्रों

1. पढ़ने के लिए लिखे हुए को text कहते हैं, इसका सम्बन्ध textbook से ही नहीं है बल्कि, किसी कहानी की किताब में भी शब्दों को text कहा जाएगा। हिन्दी में text के लिए 'पाठ' शब्द इस्तेमाल होता है।

के एक समूह में तब्दील नहीं कर देता है।'' (रोज़नब्लॉट, 1938)

पाठक और पाठ के बीच का यह लेन-देन सबके लिए एक-सा नहीं हो सकता है। यहाँ तक कि पाठक के जीवन काल में भी एक ही पाठ पर उसके अलग विचार हो सकते हैं। हर पाठक के पीछे है उसका पूर्व ज्ञान, उसकी वर्तमान स्थितियाँ, जीवन से जुड़े अनुभव, उसके सांस्कृतिक माहौल, जो किसी पाठ की ओर उसके रिस्पोंस के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसलिए रोज़नब्लॉट का मानना है कि पढ़ना एक 'पाठ-आधारित स्थिर अनुभव नहीं है' और न पाठक 'निष्क्रिय' है। पढ़ना, पाठक और पाठ के बीच एक लेन-देन की तरह है।

उदाहरण के लिए, 'सिर का सालन' कहानी पर बच्चों के साथ काम करने का अनुभव।[2] इस कहानी में आंध्रप्रदेश स्थित एक मुस्लिम परिवार में, रविवार को माँस का पकवान बनने का विवरण है जो सभी का पसन्दीदा है। इस कहानी को शाकाहारी बच्चों के साथ पढ़ने और माँसाहारी बच्चों के साथ पढ़ने के मेरे अनुभव बहुत अलग हुए। यहाँ यह बात महत्त्वपूर्ण है कि सिर्फ़ शाकाहारी या माँसाहारी होने के अलावा ये बच्चे समाज के अलग-अलग तबक़ों से भी सम्बन्ध रखते थे और इनकी जाति और सांस्कृतिक पहचान भी एक-दूसरे से भिन्न थी। जब हम सब पुस्तकालय में इस कहानी को पढ़ रहे थे तो माँस खाने वाले बच्चे इस तरह के



चित्र: पिटारा

पकवान घर में बनने के अपने अनुभव कहानी के कई हिस्सों में जोड़ रहे थे।

शाकाहारी बच्चों के भी रविवार को ख़ास पकवान बनने के कई अनुभव सामने आए। पर माँस खाने पर सांस्कृतिक और वैचारिक भिन्नता पर भी बच्चों ने अपने विचार जताए। मीट खाने वालों के मुँह में पानी ही आ गया तो नहीं खाने वालों को लगा कि यह ठीक नहीं है। उस दिन पुस्तकालय में इसपर खुल कर बात हुई कि हम जो खाते हैं वह क्यों खाते हैं। हमें एक-दूसरे के खाने पर जो आपत्ति होती है वह क्यों होती है। कहानी भारत के दक्षिण हिस्से से है, तो वहाँ के रहन-सहन को देखने का नज़रिया भी बातचीत में उभर कर आया और ऐसे ही कमरे में बैठे कई बच्चों ने अपने गाँव और अपने तौर-तरीक़ों की बात की।

जब इस कहानी को पढ़कर सुनाते हुए बातचीत के अवसर आए तो वो सिर्फ़ कहानी में आए मुश्किल शब्दों, दक्षिण भारत में कौन-से राज्य हैं, भेड़ा कैसा दिखता है, या मुश्किल शब्दों के अर्थ समझने तक ही सीमित नहीं थे। पाठ से जुड़ने के और कई अवसर आए जिसपर बच्चों ने अपने जीवन के अनुभवों, अपनी सांस्कृतिक संवेदनाओं, अपनी चिन्ताओं आदि को भी सामने रखा। कहानी को पढ़ने का उनका अनुभव अब कहानी के शब्दों को समझ पाने से कहीं आगे था। एक होटल में मेनू का विवरण पढ़ने, या अख़बार में विज्ञापन पढ़ने, या पाठ्यपुस्तक में पाठ पढ़कर उत्तर देने से, कहानी पढ़ने का यह अनुभव कहीं अलग था। यहाँ सिर्फ़ जानकारी हासिल करना उद्देश्य नहीं था, बल्कि यहाँ पाठ के साथ एक लेन-देन हुआ जिसमें सिर्फ़ लेखक का लेखन ही सर्वोच्च नहीं था बल्कि पढ़ने वाले के विचार भी उनके पढ़ने के अनुभवों में शामिल थे। पढ़ने के इस अनुभव को रोज़नब्लॉट 'सौन्दर्यपरक' पढ़ना कहती हैं। सामान्य शब्दों में कहें तो 'पाठ को जीने' का अनुभव। यह उनके सिद्धान्तों में शामिल एक अहम बात है।

2. *सन्दर्भ* में प्रकाशित 'सिर का सालन' पढ़ते हुए विविधता का ख़्याल

अच्छे पाठक असल में पढ़ने की प्रक्रिया में, ख़ासकर साहित्य पढ़ने की प्रक्रिया में इन सभी भूमिकाओं से गुज़रते हैं और इस तरह से वे उस पाठ को जीते हैं।

रोज़नब्लॉट के इन सिद्धान्तों के आलोचकों का कहना है कि फिर तो किसी पाठ का कोई एक मतलब ही नहीं रहेगा क्योंकि निजी रिस्पोंस को इतना महत्त्व दिया जा रहा है? साहित्य पढ़ने में फिर भाषा, शैली, थीम पर भी तो बच्चों का ध्यान लाना आवश्यक है और न सिर्फ़ निजी अनुभवों पर? हमारे शिक्षकों के लिए भी यह एक बहुत बड़ी समस्या है। बचपन से ही हम आदतन, एक 'सही' मतलब पर पहुँचने के प्रयास में रहे हैं। किसी साहित्य को कभी पाठ्यपुस्तक में पढ़ा भी हो, या फिर कोई सुन्दर कविता पर प्रश्न-उत्तर लिखा हो तो शायद यही कि 'इस कविता में कवि का आशय है कि... ' हम सभी लिखने के इस तरीक़े से परिचित होंगे चाहे कैसे भी स्कूल में, किसी भी क्षेत्र में पढ़े हों, ये अनुभव तो हम सबका रहा ही होगा।

आलोचकों के लिए रोज़नब्लॉट का यही कहना है कि हर लेखन / पाठ अपनी सीमाओं के साथ आता है और पाठक को इसकी ओर तर्क सहित सजग करना आवश्यक है। किसी भी अर्थ को पाठ पर फ़िट बैठाने के पक्ष में वे नहीं थीं। पर पाठ के मर्म और पाठक के विचारों के बीच में एक सन्तुलन होना आवश्यक है। दोनों में से सिर्फ़ एक सर्वाधिक महत्त्व न ले, दोनों के लिए जगह हो। हमारा कर्त्तव्य बनता है कि हम निजी रिस्पोंस के लिए जगह बनाएँ। यह करने का एक तरीक़ा है कि पाठ और पूर्व ज्ञान/अनुभव को जोड़ने के मौक़े प्रदान किए जाएँ। ये लिखित या मौखिक रूप से पढ़ने के पहले और पढ़ने के बाद किया जा सकता है। पुस्तकालय और अच्छे साहित्य के माध्यम से जब ऐसा पढ़ने का अनुभव बच्चों को लगातार होता है तो पाठक बन रहे बच्चे को लिखे हुए पर सवाल उठाने, उसकी रोशनी में अपने विचारों को जाँचने या समझने और नए विचारों के लिए दिमाग़ खोलने के मौक़े मिलते हैं और वो भी एक सुरक्षित माहौल में, जहाँ तर्क-वितर्क की सम्भावना भी मिले। स्वयं के लिए अर्थ निर्माण के ये आवश्यक पड़ाव हैं।

पाठक प्रतिक्रिया : कैसे सक्रिय करें ?

अपने अनुभव के दौरान एक स्कूल में काम करते हुए जब पहली बार कहानी पढ़ने के पश्चात मैंने बच्चों को अपनी बात रखने को कहा– तो कुछ देर एक सन्नाटा-सा हो गया। उन्होंने एक-दूसरे को देखना शुरू कर दिया। जिन प्रश्नों में एक सामूहिक और तय जवाब की सम्भावना थी वहाँ वो चुप नहीं थे। और न पूछते हुए भी बच्चों ने बता दिया कि कहानी से उन्होंने क्या सीखा। यही बात लेखन और चित्र बनाने के समय भी हुई। स्कूल में जैसे अपनी बात कहने, लिखने, बनाने की आदत ही ख़त्म हो चुकी थी। ये संघर्ष कुछ समय तक चलता रहा। मैंने कहानी की किताब कुछ देर उनके हवाले कर दी और उसे देखने के लिए छोड़ दिया। उस समय उनकी आपस की बातचीत चित्रों, पात्रों आदि के बारे में थी। यहाँ दो बातें हैं– पहली, अपनी बात कहने का मौक़ा आने पर संघर्ष, दूसरी टीचर की ग़ैर-मौजूदगी में स्वतंत्रता से चर्चा कर पाना। हालाँकि अब इन बच्चों के साथ बातचीत करने में दिक़्क़त नहीं आती और अब ख़ुद भी अपनी बात कहने के लिए वो आगे आते हैं। अब उन्हें ये इल्म हो गया है कि किताब में उनके लिए निर्धारित प्रश्नों के अलावा बहुत कुछ होता है और अपनी बात कहने पर कोई रोक-टोक नहीं होगी। इन बच्चों में से कई बच्चे अपनी कक्षा में 'फर्राटे' से पढ़ पाने के लिए जाने जाते हैं। मगर अपनी बात रखने में वे पीछे ही रहे।

ऐसा कहा जाता है कि बच्चे जब स्कूल आते हैं, तो खाली घड़े या स्लेट की तरह होते हैं। मुझे ऐसा बिलकुल नहीं लगता, पर ये ज़रूर लगता है कि शायद नया भरने के लिए उन्हें खाली कर दिया जाता है। यह बहुत ज़रूरी है

कि हम इन घड़ों और स्लेटों की बातों में न उलझ कर बच्चों को ऐसा माहौल दे पाएँ जो अपने-आप को व्यक्त करने की स्वाभाविकता उनसे न छीने और जो सच में उन्हें एक पाठक के रूप में विकसित करे। इन सम्भावनाओं को हमें कक्षा में विकसित करना होगा और ऐसे मौक़े बनाने होंगे। यहाँ कुछ ऐसे ही तरीक़ों का ज़िक्र है–

1. बातचीत

बातचीत पर स्कूल में अकसर रोक होती है। जिस स्कूल में मैं पुस्तकालय का काम देखती हूँ वहाँ कहानी पढ़ने के दौरान या उसके बाद भी यदि किसी बच्चे को कुछ कहना हो तो वे तब तक नहीं कह सकते जब तक वे अपना हाथ उठाकर कहने की इच्छा ज़ाहिर न करें और यह टीचर एक्शन नोटिस कर उन्हें बोलने की अनुमति न दे। बात करने जैसी स्वाभाविक प्रक्रिया पर इतनी रोक है कि हम इसे एक संसाधन के रूप में नहीं देख पाते हैं। बातचीत साहित्य पर बच्चों की प्रतिक्रियाओं को सामने रखने का बहुत अहम तरीक़ा है। साहित्य पर ख़ासतौर से बातचीत बहुत महत्त्वपूर्ण है। लूसी काल्किंस ने कहा है, ''हमारे जीवन में हमें वे किताबें याद रह जाती हैं जिनपर हमने बात की हो।'' साहित्य पर बातचीत एक बहुत सहज तरीक़ा है बच्चों को प्रतिक्रिया देने के मौक़े रचने का। यह बातचीत पठन, लेखन गतिविधियों में गुँथी हो सकती है, यह उनके बीच का संवाद हो सकता है या फिर किसी कहानी को पढ़ने के पश्चात शिक्षक / लाइब्रेरियन सोच-विचार के साथ भी इस बातचीत को दिशा दे सकते हैं। इसके दो तरीक़ों का ज़िक्र यहाँ किया जा रहा है जो मेरे अनुभव का भी हिस्सा रहे हैं।

पढ़कर सुनाना या रीड अलाउड :

पढ़कर सुनाने में कहानी के पहले, कहानी के दौरान और उसके बाद प्रश्नों और कहानी पर रिस्पोंस के माध्यम से कई तरह की बातचीत की जा सकती है- कहानी के पात्रों पर, कहानी के चित्रों पर, कहानी से जुड़े पूर्व अनुभवों पर, या कहानी पर अपनी प्रतिक्रिया पर जो कैसी भी हो सकती है। कहानी अच्छी लगी या नहीं लगी या क्या सीख मिली, से बेहतर कहानी पर कुछ पहले से तैयार प्रश्नों के ज़रिए बातचीत करना होती है। इसका उदाहरण लेख के शुरू में 'गाँव का बच्चा' कहानी पर हुई बातचीत के अंश में पढ़ा। कई बार बातचीत बच्चों को अन्य प्रतिक्रियाओं या अभिव्यक्ति के मौक़े जैसे लेखन कला तक ले जाने का भी एक उपयोगी ज़रिया हो सकती है।

किताब पर चर्चा :

ऐसी कोई कहानी जिसे कक्षा में सभी बच्चों ने पढ़ा हो या कुछ ने पढ़ा हो, उसपर एक गोले में बैठकर बातचीत की जा सकती है। कहानी



चित्र: अजा (रोशन लाइब्रेरी, घाटकोपर, मुंबई) सरकारी स्कूल की लाइब्रेरी, चिंतकुंटा, यादगीर, कर्नाटक



पढ़ी गई कहानियों में अपनी पसन्दीदा कहानी के बारे में 'किताब की चर्चा' के दौरान

सबने सुनी या पढ़ी हो, तो सबके शामिल होने की सम्भावना बढ़ जाती है। यहाँ कहानी दोहराने के बजाय उसके अलग-अलग पहलुओं पर बच्चों को बोलने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। शुरू में शायद कुछ हिचक हो तो शिक्षक को भी स्वयं किताब पढ़कर कुछ ख़ास प्रश्न तैयार रखने चाहिए जिनसे बातचीत को आगे बढ़ाया जा सके, जैसे– किताब के पात्र या उसके किसी ख़ास चित्र को लेकर। यही मौक़ा कविताओं व साहित्य की अन्य विधाओं के सन्दर्भ में भी काम में लिया जा सकता है।

बातचीत के लिए कुछ प्रश्न / प्लॉट तैयार करना बहुत आवश्यक है। ये ऐसे हों जिनमें अलग-अलग विचारों के आने की सम्भावना हो, कुछ चर्चा करने की सम्भावना हो न कि सीधे सपाट या हाँ–ना वाले जवाब हों। बातचीत शुरू करने के लिए कुछ सरल प्रत्यक्ष प्रश्न हो सकते हैं। फिर कुछ व्याख्यात्मक, चिन्तनात्मक सवाल भी रखे जा सकते हैं।

2. लेखन

लेखन में भी बातचीत की तरह अपनी अभिव्यक्ति करने, प्रतिक्रिया देने के कई मौक़े निहित होते हैं। कुछ बच्चे अपने-आप को बोलने से बेहतर लेखन में व्यक्त कर पाते हैं। इसलिए बच्चों के लिए लेखन के ये अवसर भी मौजूद होने चाहिए। जब बच्चों को (निर्धारित लेखन के अतिरिक्त) अपनी बात कहने के लिए लिखने को कहा जाता है तो असमंजस में पड़ जाते हैं। इसमें उनको समय देना और उनकी सहायता करना आवश्यक है। इसका मूल्यांकन करने की बजाय उनके लिखे हुए को साथियों में साझा करने, सुनाने के मौक़े देना ज़्यादा अच्छा रहता है। लेखन, कहानी पढ़कर सुनाने या पढ़ने के बाद की गतिविधि का हिस्सा हो सकता है जिसमें कहानी से जुड़े कुछ काम हो सकते हैं जैसे–

- कहानी को आगे बढ़ाकर लिखना- बच्चे आपस में चर्चा कर, छोटें ग्रुप में कहानी को आगे बढ़ाने का काम कर सकते हैं। इसमें साथ में चित्र भी बनाए जा सकते हैं।
- कहानी का अन्त बदलना– कहानी पढ़ने के पश्चात जोड़ियों में बच्चे कहानी के लिए कुछ और अन्त सोच सकते हैं।
- कहानी पर अपनी टिप्पणी दर्ज़ करना- बच्चों की एक लाइब्रेरी नोटबुक हो सकती है जिसमें उन्हें पढ़ी हुई कहानियों पर अपनी टिप्पणी लिखने को कहा जा सकता है। टिप्पणी लिखने के लिए शुरुआत में उन्हें कुछ मार्गदर्शन की आवश्यकता होगी– पात्रों के बारे में लिखें, कहानी में जो हुआ उसके बारे में क्या महसूस हुआ आदि।
- कहानी के लेखक या पात्र को पत्र लिखकर अपने विचार बताना– पत्रों में अपने विचार लिखना यूँ ही अकेले लिखने से कहीं ज़्यादा आसान होता है।
- कहानी में आए किसी जीव, स्थान, चीज़ के बारे में एक बुक बनाना।
- शब्दहीन चित्र पुस्तकों पर अपनी कहानी बनाना।

हम किराए के एक छोटे-से मकान में रहते थे। मेरे पिताजी कुली का काम करते थे। उस घर में टॉयलेट के लिए हमें बहुत दूर जाना पड़ता था। और हमें वहाँ रहने में बहुत तकलीफ़ होती थी। एक बार सरकारी मकान वाले साहब आए। उन्होंने एक काग़ज़ दिया जिसे हमारे पापा को भरना था। मेरे पापा फ़ॉर्म भर कर साहब को दे आए। कुछ दिनों में ही हम लोगों को सरकारी आवास मिल गया। हम लोग सामान बँटोरने लगे। मैंने अपने कपड़े, किताब और गुड़िया एक छोटे बक्से में रख दिए। मम्मी ने एक गठरी बनाई जिसमें बिस्तर, बर्तन आदि रखा क्योंकि हमारे पास बहुत बक्से नहीं थे। तब पापा ने छोटा

हाथी (पिकअप) मँगवा कर उसपर सारा सामान लदवा दिया। हम सरकारी आवास में पहुँच गए। हमारा आवास सीढ़ियों से ऊपर दूसरी मंज़िल पर था। सारा सामान सीढ़ी से ऊपर चढ़वाया गया। मम्मी, बहन और मैंने सारा सामान अच्छे-से व्यवस्थित किया। इस तरह घर को देखकर हमें बहुत ख़ुशी हुई और जैसी कल्पना मैंने की थी वह उससे भी अच्छा था। इस आवास में लैट्रिन, बाथरूम और किचन बना था। बड़े कमरे थे। बड़ी-बड़ी हवादार खिड़कियाँ थीं। उजाला भी बहुत था। जगह भी बहुत थी।

पुराना घर याद आता है क्योंकि वहाँ मैंने कद्दू की बेल उगाई थी जिसमें फल आ गए होंगे। यहाँ पर पौधे लगाने की जगह नहीं है। यहाँ मेरे बहुत से दोस्त बन गए हैं।

बेबी जायसवाल (प्राथमिक विद्यालय धुसाह, बलरामपुर, उत्तरप्रदेश)

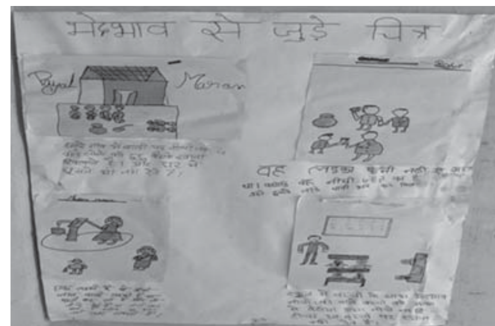


लेखन के कार्य के लिए ये बस कुछ उदाहरण हैं। इसके अलावा भी और बहुत कुछ किया जा सकता है। कहानी की थीम से जुड़ता हुआ लेखन कार्य अकसर बच्चों को लिखने का एक आधार देता है। साथ ही बातचीत और लेखन का गहन सम्बन्ध है। कई बार बातचीत हमें अपने लेखन के लिए कई आधार देती है। उत्तरप्रदेश के एक सरकारी स्कूल में टीचर जय शेखर ने बच्चों को 'टुम्पा और गौरैय्या' कहानी सुनाई जिसमें 'एक घर से नए घर में जाने' या तबादले का ज़िक्र था। बच्चों ने अपने ऐसे अनुभव भी साझा किए जिसमे तबादले या पलायन के अनुभव प्रमुख रहे। उनमें से बेबी नाम की बच्ची ने घर बदलकर एक सरकारी मकान में जाने का अनुभव साझा किया और एक चित्र भी बनाया। (बॉक्स में)

लिखित प्रतिक्रिया पर कई बार हम ये सोचकर ज़ोर नहीं देते कि बच्चों का लेखन यदि अच्छा नहीं है तो वे कैसे इस कार्य को कर पाएँगे। अपने बच्चों के साथ कब क्या काम करना है, निश्चित ही शिक्षक ये निर्णय ले सकते हैं। लेकिन गलत मात्राओं, टूटे-फूटे वाक्यों, ग़लतियों से घबराने की ज़रूरत कतई नहीं है। बच्चे लेखन में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर पाएँ और हम उसे सम्मान दें यह आवश्यक है। अपने लाइब्रेरी कार्य में मैं अकसर बच्चों द्वारा लिखी प्रतिक्रियाओं को पढ़कर सुनाने के अवसर भी देती हूँ। तब इन लिखित प्रतिक्रियाओं पर और भी प्रतिक्रियाएँ आती हैं। लेकिन जब बच्चे ख़ुद इन्हें अपने तरीक़े से पढ़ते हैं तो एक गर्व महसूस करते हैं। अपने दोस्तों के लिए ताली बजाते हैं और एक-दूसरे को प्रोत्साहित करते हैं। यह सौहार्द्र ऐसे अवसरों से ही उत्पन्न होता है जहाँ होड़ भूल हम एक-दूसरे के विचारों को समझने की कोशिश करते हैं।

3. आर्ट

बच्चों को आर्ट के माध्यम से व्यक्त करना भी कई बार सहज महसूस कराता है और उन्हें यह अच्छा और रोचक भी लगता है। आर्ट बातचीत और लेखन से बहुत अलग-थलग नहीं



चित्र : अजा (मुस्कान लाइब्रेरी, भोपाल)

है पर अपने-आप में एक अलग अभिव्यक्ति ज़रूर है। इसको ऊपर दिए तरीक़ों के संग जोड़ा भी जा सकता है। आर्ट में बहुत कुछ शामिल है– किसी कहानी का अपने तरीक़े से चित्रण करना, उसके लिए एक नया कवर-पेज बनाना, कहानी से जुड़े अपने जीवन के किसी अनुभव को चित्रित करना, कहानी को नाटक के ज़रिए प्रस्तुत करना, पात्र के जीवन को चित्रों में दर्शाना, कविता पर एक चित्र बनाना आदि कई तरीक़े हैं। इनमें किताब के साथ ठहरने, उसमें फिर समझने, और उसपर अपना एक नज़रिया बनाने का अवसर होता है। एकलव्य द्वारा प्रकाशित 'गीत का कमाल' कहानी को पढ़ने के पश्चात जब बच्चों को गीत बनाने को कहा गया तो उन्होंने 'उड़े सरर-सरर' पंक्ति का प्रयोग करते हुए छत पर सूख रहे कपड़ों का चित्र बना दिया। उनके शहरी माहौल में छत और बालकनियों से कपड़े सूखते-उड़ते ही उनके अनुभव थे। जातिगत भेदभाव से सम्बन्धित एक कहानी को पढ़ने के पश्चात भेदभाव के अपने आसपास के अनुभव बच्चों ने लिखे और चित्र बनाए।





चित्र : अजा



चित्र सौजन्य : कविता कपिल

एक भील कथा पढ़ने के बाद भीली आर्ट को बच्चों ने भी अनुभव किया।

पराग, टाटा ट्रस्ट्स द्वारा संचालित लाइब्रेरी एजुकेटर कोर्स में 2016 की प्रतिभागी कविता ने बच्चों के साथ मृत्यु-आधारित कुछ किताबों पर बातचीत की। उनके मन में इस बात को छेड़ने का डर था और ये जिज्ञासा भी बच्चों की क्या प्रतिक्रिया होगी। *पंछी प्यारा, सदाको* और *काग़ज़ के पक्षी* जैसी किताबों के ज़रिए कविता के प्रयासों से बच्चों के साथ एक खुली बातचीत सम्भव हो पाई।

चित्रों में बच्चों ने मृत्यु के अपने अनुभवों को बयान किया और इस सन्दर्भ में आपस में और कविता के साथ अपने सन्देह, अपने प्रश्न, अपनी चिन्ताएँ आदि सामने रखीं। यहाँ चित्रों के जो उदाहरण हैं उनसे ज़ाहिर है कि बच्चों ने अपनी अभिव्यक्ति के लिए इनका प्रबल इस्तेमाल किया है। ये सिर्फ़ बोर्ड पर सज़ा देने के चित्र न होकर उनकी अभिव्यक्तियाँ हैं।

इन तीन मुख्य तरीक़ों में और भी बहुत कुछ सम्भव है। इनके अलावा भी कई काम हो सकते हैं जैसे- नाटक या किताबों का रिव्यू। पर ऊपर दिए गए तरीक़ों में भी काफ़ी सम्भावनाएँ हैं साहित्य से जुड़ने और उसपर

प्रतिक्रिया करने के लिए। प्रतिक्रियाओं के इन तरीक़ों में व्याख्या, विश्लेषण के भरपूर मौक़े हो सकते हैं। बच्चों की प्रतिक्रियाएँ उनके जीवन के सन्दर्भों, सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, पढ़ने के अनुभवों व अन्य कई कारणों से प्रभावित हो सकती हैं। शिक्षक ख़ुद भी किताबों को पढ़ें, अपनी प्रतिक्रिया बनाएँ, लेखक के उद्देश्यों को समझें, ख़ुद के प्रश्न उठाएँ और अपने नज़रियों को भी खोलें और अपनी प्रतिक्रिया को बच्चों पर न थोपें। उन्हें उनके नज़रिए बनाने में मदद करें। हमारा उद्देश्य होना चाहिए प्रतिक्रियाओं के बनने के लिए एक सुरक्षित माहौल बनाना, जहाँ मान्यताओं पर सवाल उठ सकें, लेखक के नज़रियों से असहमत हो सकें और यह समझ सकें कि हर समझ पर तर्क-वितर्क सम्भव है।

निष्कर्ष

पुस्तकालय और अच्छे साहित्य के माध्यम से किताबों से जुड़ने का ऐसा अनुभव बच्चों को लगातार मिलना चाहिए– जहाँ सवाल उठाना, उसकी रोशनी में अपने विचारों को जाँचने या समझने और नए विचारों के लिए दिमाग़ खोलने के मौक़े और प्रतिक्रिया अभिव्यक्त करने के इतने अवसर वो भी एक सुरक्षित माहौल में, जहाँ तर्क-वितर्क की सम्भावना भी मिले।

एक ओर जहाँ स्कूलों के निर्धारित टाइम टेबिल में सारा ध्यान पढ़ना-लिखना सिखाने की तकनीकियों पर केन्द्रित रहता है वहीं पढ़ने के मायनों को विकसित करने की आवश्यकता भी है। साहित्य वह सम्भावना देता है। पुस्तकालय में साहित्य को केन्द्र में रखते हुए इस तरह के संवाद एक सोचे-समझे तरीक़े से किए जा सकते हैं। साहित्य न सिर्फ़ और खिड़कियाँ खोलता है बल्कि नए अनुभवों की ओर भी हमें खींचता है। तब पढ़ना हमारे और हमारे बच्चों के लिए सार्थक हो जाता है। संवाद को लुई रोज़नब्लॉट एक अहम स्थान देती थीं क्योंकि इनमें न सिर्फ़ स्वयं के अनुभव और विचार उभरते हैं बल्कि दूसरों के भी तरह-तरह के भिन्न विचारों को जानने का मौक़ा बनता है और ऐसे पाठक जो इन संवादों में शामिल होते हैं वे पाठक होने की सार्थकता को महसूस करते हैं। इस पूरी बातचीत में सबसे ज़रुरी एक शिक्षक के बतौर हमारा ख़ुद पढ़ना और संवेदनशील होना भी है और साथ ही अपने बच्चों को जानना, समझना और उनपर एक विश्वास करना।

आभार: लाइब्रेरी एजुकेटर कोर्स (एलईसी) (पराग इनिशिएटिव टाटा ट्रस्ट्स) के प्रतिभागियों का जिन्होंने कोर्स से प्रेरित हो अपनी लाइब्रेरी में बच्चों के साथ यह काम किए और इन्हें साझा किया।

- *कविता कपिल, एलईसी बैच 2016 (चिराग, उत्तराखंड)*
- *नीतू यादव, बैच एलईसी 2017 (मुस्कान, भोपाल)*
- *दुर्गा, एलईसी बैच 2018 (शिक्षार्थ, छत्तीसगढ़)*
- *जय शेखर, एलईसी बैच 2019 (टीचर, उत्तर प्रदेश)*
- *उन सभी बच्चों का जिनके काम यहाँ साझा किए गए हैं*

सन्दर्भ

Rosenblatt Louise. 1980. *'What Facts Does This Poem Teach You ?'*Language Arts

Rosenblatt Louise. 2005. *Making Meaning with texts*, *Selected Essays*, Hiennemann, Portsmouth, NH.

Rosenblatt Louise. 1960. 'Literature: The Reader's Role,' *The English Journal*, Vol. 49, No. 5. (May, 1960), pp. 304-310+315-316

Sinha, Shobha. 2009. 'Rosenblatt's Theory of Reading: Exploring Literature', *Contemporary Education Dialogue*, Vol. 6, No. 2

मेनन शैलजा, 2015. *बाल साहित्य के ज़रिए प्रारम्भिक भाषा*, भाषा बोली, रूम टू रीड, नई दिल्ली।

मोहम्मद खादीर बाबू. 2018, सिर का सालन (हिन्दी), एकलव्य प्रकाशन, अन्वेषी हैदराबाद के डिफरेंट टेल्स प्रोजेक्ट के तहत रतन टाटा ट्रस्ट्स के समर्थन से प्रकाशित।

स्वप्नमोय चक्रबोर्ती. 2009, *टुम्पा और गोरैय्या*, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।

शेर सिंह भील, नीना सबनानी. 2015. एक भील कथा, तूलिका प्रकाशन, चेन्नई।

अजा पिछले तेरह वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में ग़ैर-सरकारी संस्थाओं के साथ काम कर रही हैं। पिछले चार वर्षों से पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट्स द्वारा विकसित लाइब्रेरी एजुकेटर कोर्स (हिन्दी) में बतौर फैकल्टी जुड़ी हुई हैं व कार्यक्रम लीडर हैं। मुख्य काम के साथ-साथ, सामुदायिक व स्कूल लाइब्रेरी में वालंटियर लाइब्रेरियन के तौर पर भी काम करती रही हैं।

सम्पर्क : ajaa.sharma@gmail.com